सामुदायिक स्वास्थ्य में सूचना तकनीक की उपयोगिता

भारत डोगरा

दूर-दूर के गांवों में स्वास्थ्य की स्थिति सुधारने में नई सूचना तकनीकी के उपयोग से नई संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं, जिनका बेहतर से बेहतर उपयोग करना चाहिए। मोबाइल फोन से मरीज़ स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं व डॉक्टरों से बेहतर संपर्क कर सकते हैं व स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी डॉक्टरों से बेहतर संपर्क बना सकते हैं। इमरजेंसी या गंभीर संकट की स्थिति में यह बहुत उपयोगी होगा।

इसके अतिरिक्त सामान्य गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए भी यह बहुत उपयोगी है। इससे पता चल सकता है कि किसी दिन स्वास्थ्य कार्यकर्ता किस गांव में जा रहे हैं और उस गांव सम्बंधी कोई भी कार्य हो तो उन्हें इस बारे में सूचना दी जा सकती है। सामुदायिक स्वास्थ्य सम्बंधी विभिन्न मीटिंगों में उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए भी यह बहुत उपयोगी है। शिशु जन्म के बारे में तुरंत जानकारी दी जा सकती है व कोई भी विशेष समस्या हो तो उसकी व्यवस्था तुरंत करने में इससे सहायता मिलती है।

अब ऐसे मोबाइल भी उपलब्ध हैं जिनका उपयोग प्रोजेक्टर की तरह 20-30 व्यक्तियों को वीडियो-ऑडियो दिखाने के लिए किया जा सकता है। इस तरह भारी व महंगे उपकरण के बिना ही सुदूर-दूर गांवों में बहुत-सी स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारी चित्रों सहित पहुंच सकती है।

इस तरह के विशेष आई.वी.आर. सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनके ज़रिए मरीज़ व स्वास्थ्य कार्यकर्ता बड़े अस्पताल में संदेश रिकार्ड करवा सकते हैं जिन्हें सुनकर शीघ्र ही समुचित कार्यवाही हो सकती है या मात्र दर्ज किया जा सकता है। इस तरह जन्म-मृत्यु जैसी जानकारी भी अपडेट होती रहती है।

जन स्वास्थ्य सहयोग संस्था ने बिलासपुर ज़िले के अपने सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम में इन सब संभावनाओं का बेहतर उपयोग किया है। संस्था का कार्यक्षेत्र दूर-दूर के आदिवासी गावों में फैला हुआ है। कभी-कभी तो मोबाइल फोन का सिग्नल प्राप्त करने के लिए भी एक-दो किलोमीटर चलना पड़ता है।

संस्था का मुख्य अस्पताल गनियारी में है। यहां प्रतिदिन या हर दूसरे दिन आई.वी.आर. में दर्ज सारी जानकारियों को सुना जाता है व समुचित कार्यवाही की जाती है।

दूर-दराज़ के क्षेत्रों में सभी तरह के विशेषज्ञ डॉक्टर उपलब्ध करवाना बहुत कठिन है। इस कमी को जन स्वास्थ्य सहयोग ने कुछ हद तक वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पूरा करने की कोशिश की है व इसके बहुत अच्छे परिणाम मिल रहे हैं।

उदाहरण के लिए विख्यात मनोचिकित्सक डॉ. प्रशांत गोगिया व हृदय चिकित्सक डॉ. सतीश गोयल इस तरह टेली मेडिसिन के माध्यम से अनेक मरीज़ों के इलाज में सहायता पहुंचा चुके हैं। मरीज़ गनियारी स्थित अस्पताल में किसी स्वास्थ्य कार्यकर्ता की उपस्थिति में अपनी समस्या बताते हैं और इसे तसल्ली से सुनकर व उनकी विभिन्न जांच रिपोर्ट को देखकर डॉक्टर टेली मेडिसिन के माध्यम से उनके इलाज में बहुमूल्य योगदान देते हैं।

डॉ. प्रशांत गोगिया ने बताया कि पहले वे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का उपयोग कम समय के लिए करते थे, पर अब वे अधिक समय के लिए भी इसका उपयोग करने लगे हैं। उन्होंने बताया कि मनोचिकित्सा में मरीज़ की बीमारी का पता करने में व दवा देने के लिए तो वे इस तकनीक का उपयोग पहले से कर रहे हैं, अब आगे काउंसलिंग के लिए भी कर सकते हैं पर इसके लिए मरीज़ से सीधे मिलना बेहतर रहता है। उन्होंने कहा कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग बहुत उपयोगी हैं, पर उसकी कुछ सीमाएं भी हैं। इसका उपयोग काउंसलिंग के लिए करना है तो मरीज़ के लिए कुछ बेहतर स्थितियां उत्पन्न करनी होंगी जिससे वह तसल्ली से अपनी बात कर सके। वैसे पहले भी इतने दूर-दूर के गांवों में रहने वाले लोग कंप्यूटर स्क्रीन पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए अपनी बात को काफी आसानी से बताते हैं, उन्हें कोई विशेष झिझक नहीं होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***